Nav Jyoti, Vol. 5, No. 10, January-June 2017 ISSN : 2249-7331

चेरो जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 शंभु नाथ मिश्र*

भारत के 28वें राज्य के रूप में झारखण्ड राज्य का गठन 15 नवम्वर 2000 को किया गया। इस राज्य का क्षेत्रफल 79714 वर्ग किलोमीटर है और प्रशासनिक दृष्टिकोण से 5 प्रमण्डल, 24 जिले, 37 अनुमंडल एवं 260 प्रखंड में विभक्त है। इस राज्य में अनेक प्रकार के खनिज संपदायें पाये जाते हैं, जैसे कोयला, लोहा, वॉक्साइड, ताँबा आदि। यहाँ की प्रमुख नदियों में कोयल, शंख, स्वर्णरेखा, दामोदर, और बराकर इत्यादि है।

2011 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड की कुल जनसंख्या 3,29,88,134 है, जो भारत के कुल जनसंख्या का 2.72 प्रतिशत है। इनमें से 16,93,0315 पुरूष एवं 16,05,7819 महिलाएं हैं, झारखण्ड राज्य की साक्षरता दर 67.63 प्रतिशत है। इसमें पुरूष साक्षरता दर 78.45 एवं महिला साक्षरता दर 56.21 प्रतिशत है। झारखण्ड को राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय बाहुल्य राज्य के रूप में जाना जाता है। यहाँ कुल 32 प्रकार की अनुसूचित जनजातियां निवास करती हैं। इनमें अनेक प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विभिन्नता देखने को मिलती है। झारखण्ड की अनुसूचित जनजातियों को दो हिंस्सों में वांटा गया है– प्रमुख जनजातियाँ और आदिम जनजातियाँ। झारखण्ड में निवास करने वाली प्रमुख 24 जनजातियों में संथाल, उरॉव, मुण्डा, हो, बैगा, वंजारा, बथुडी, वेदिया, भूमिज, विंझिया, चेरो, चीक–वड़ाईक, गौंड, गोडाईत, करमाली, खडिया, खरवार, खोंद, किसान, कोरा, लोहरा, महली, कोल एवं कंवर हैं और असुर, विरहोर, बिरजिया, कोरवा, परहिया, सौरिया पहाड़िया, माल पहाड़िया एवं सवर को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। जनजातीय कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के अनुसार आदिम जनजातियों की प्रमुख विशेषताओं में कृषि पूर्व अर्थव्यवस्था, शिक्षा का निम्न स्तर एवं घटती हुई जनसंख्या है। झारखण्ड में निवास करनेवाली प्रमुख अनुसूचित जनजतियों की स्थिति आदिम जनजातियों की अपेक्षा बेहतर है।

अध्ययन क्षेत्र एवं शोध विधि

लातेहार जिला झारखण्ड के 24 जिलों में से एक है। लातेहार नगर इसका प्रशासनिक मुख्यालय है। यहॉ की जनसंख्या 7,25,665 है। जो लगभग भुटान की जनसंख्या के बराबर है। यहॉ जनसंख्या का घनत्व 520 व्यक्ति प्रति किलोमीटर है, वहीं दूसरी ओर इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 29.38 प्रतिशत है।यहॉ की साक्षरता दर 61.38 प्रतिशत है। लातेहार जिला में चेरो जनजाति की जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 23,215 है। लातेहार जिला 9 प्रखंडो में विभक्त है। वे है– लातेहार, गारू, मनिका, बरवाडीह, महुआडॉड, बालुमात, बारियातु, चन्दवा और हेरहंज। प्रस्तुत शोध अध्ययन बरवाडीह प्रखंड के कुटमु एवं केचकी गॉव में सम्पन्न किया गया है। यह गॉव बेतला रिजर्व फोरेस्ट तथा कोयल नदी एवं औरंगा नदी के बीच में अवस्थित है। इस अध्ययन के लिए समुह साक्षात्कार एवं अवलोकन शोध विधि का साहारा लिया गया है।

चेरो जनजाति का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

झारखण्ड के पाँच (5) प्रमण्डलों में पलामू भी एक प्रमण्डल है। इस प्रमण्डल में तीन जिले क्रमशः है : मेंदनीनगर, गढ़वा और लातेहार हैं। वर्ष 2011 के जनगणनना के अनुसार (पलामू प्रमण्डल की कुल जनसंख्या 3,98,8313 है। चेरो झारखण्ड में निवास करनेवाली प्रमुख अनुसूचित जनजातियों में से एक है। चेरो झारखण्ड के सभी जिलों में छिटपुट रूप से पाये जाते हैं, पर इनका मुख्य संकेन्द्रन पलामू प्रमण्डल के तीनो जिलों अर्थात मेदनीनगर, गढ़वा और लातेहार में है। इस जनजाति के राजाओं द्वारा पलामू पर लगभग 200 वर्षो तक (1613 इस्वी से 1818) शासन किया गया। 2011 के जनणगना के अनुसार चेरो अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 95,575 है जिसमें पुरूष 48860 और महिलाएं 46715 है।

* लटमा रोड, सिंह मोड़, हटिया, राँची–3 (झारखण्ड)

पूर्व में इनका स्वतंत्र शासन भोजपूर (बिहार) में था। चेरो जनजाति की जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार लातेहार में 23215, मेदनीनगर में 62346 एवं गढ़वा में 8081 है। प्रजातीय दृष्टिकोण से इस जनजाति को प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड समूह में रखा गया है। कर्नल डाल्टन ने अपनी पुस्तक ''इथनोलॉजी और बंगाल'' में लिखा है कि, पलामू के चेरो जनजाति शाहाबाद से निकाले गये थे। हरिमोहन अपनी पुस्तक (द चेरो) में लिखते हैं कि पलामू पर सत्तासीन मानसिंह के परिवार की हत्या कर पलामू की सत्ता पर चेरो द्वारा कब्जा किया था। वह वर्ष सन् 1613 था। चेरो के 200 वर्षो के शासन काल में सबसे ख्याती प्राप्त राजा मेदनीराय थे। उन्हीं के नाम पर डाल्टनगंज का नाम बदलकर वर्तमान में मेदनीनगर कर दिया गया है। कर्नल डाल्टन के अनुसार चेरो परिवारों की शुरूआत राजा किशोर नारायण सिंह से हुआ, जो बंदी राजपुत थे तथा गुरू गोमती बुंदेलखंड के राजा भी थे। इनकी पुत्री का विवाह च्यवन मुनी से हुआ था। इसके बाद चेरो च्यवनवंशी कहे जाने लगे अर्थात चन्द्रमा का पुत्र कहे जाने लगे थे। चेरो पलामू में कोयल एवं ओरंगा नदी के किनारों पर बसे हैं। किसी भी स्थान पर बसने से पूर्व चेरो इन बातों का ध्यान रखतें है– आवागमन के साधन, जंगली स्रोतो की उपलब्धता, उपजाऊ एवं कृषि योग्य भूमि, जल की उपलब्धता तथा मजदूर की उपलब्धता।

समाजिक जीवन

चेरो अनुसूचित जनजाति दो उपजातियों में विभक्त है, पहला बारह हजरी और दूसरा तेरह हजरी या वीरबंधीय। बारह हजारी अपने को श्रेष्ठ मानते है, ये तेरह हजरिया के यहाँ का कच्चा भोजन भी नहीं खाते हैं। इनमें आपस में वैवाहिक संबंध भी नहीं होता है। चेरो जनजाति सात गोत्रों में विभक्त है जैसे– कुंवर, सावंत, मउवार, सोहनाईंत, महतो, मांझी एवं राउतिया। कुंवर और मउवार भी दो–दो भागो में विभक्त है जैसे– बड़का कुंवर और छोटका कुंवर तथा बड़का मउवार और छोटका मउवार। इनमें सगोत्र विवाह का प्रचलन नहीं है। मउवार, कुंवर और सावंत के बीच वैवाहिक संबंध होता है, पर अन्य गोत्र सहनाईंत, महतो, मांझी एवं राउतिया के साथ वैवाहिक संबंध नहीं होता है। क्योंकि ये अपना उप नाम महतो और मांझी रखते हैं तथा उनकी संख्या भी कम है। चेरो में सपिण्ड विवाह का भी प्रचलन नहीं है। संपन्न चेरो द्वारा अपना विवाह राजपुत परिवारों में भी किये हैं, पर चेरो अपनी ही जाति में विवाह करना पसंद करते हैं। इनमें विवाह के तीन तरीके प्रचल्लित है जैसे– चढ़ बारात, डोला एवं घराव विवाह। ये अपनी शादी हिन्दु रीतियों से करते हैं। विवाह के लिए अगुआ का भी सहारा लेते हैं। इनमें भी तिलक एव ंदहेज प्रथा प्रचलित है, जो वर को प्रदान किया जाता है। राम कुमार तिवारी अपनी पुस्तक में वधु मुल्य की बात करते हैं, जो कहीं दस्तुरी तो कहीं झांपी के रूप में दिया जाता है। वैवाहिक कार्य नाई एवं ब्राह्मण की सहायता से सम्पन्न किया जाता है। चेरो अनुसूचित जनजाति एक पितृ सतात्मक परिवार है। चेरो में परंपरागत रूप से जाति पंचायत की व्यवस्था थी, जिसे भैयारी पंचायत कहा जाता था। इनकी अपनी कोई भाषा नहीं है। ये पलामू में बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग करते हैं। पलामू में चेरो नें अपने शासन काल में अनेको जातियों एवं जनजातियों को भी बसाया है। इस कारण इन्हें आज भी "गौंवा" कह कर संबोधित करते हैं अर्थात गांव का मालिक कहते है। इस जनजाति द्वारा लंबे समय तक उच्च हिन्दु जातियों के साथ रहनें के कारण इन पर उनका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। हरिमोहन ने अपनी पुस्तक (द चेरो) में इसे चेरो का परसंस्कृतिग्रहण माना है। इसी के प्रभाव के कारण ये हिन्दु देवी–देवताओं एवं पर्व–त्योहारों को मनाने के साथ हीं साथ चेड़ी दरहा, दुर्यागिन एवं गम्हेल की भी पुजा करते हैं। इसके लिए वैगा का सहारा लिया जाता है। ये डायन, भुत एवं काला जादु पर भी विश्वास करते हैं

आर्थिक जीवन

झारखण्ड में निवास करने वाली अनुसूचित जनजातियों के आर्थिक जीवन और जीविका का मुख्य आधार कृषि एवं वनोत्पादक है। चेरो जनजाति के आर्थिक जीवन के मुख्य स्रोत निम्नलिखित है।

कृषिः– कृषि आज भी चेरो जनजाति की आजीविका का मुख्य स्रोत है। ये अपने खेतों तें धान, मक्का, उरद, अरहर एवं थोड़ी बहुत मात्रा में सब्जी की खेती करते हैं। ये आज भी हल बैल की सहायता से ही खेती करते हैं। इनकी कृषि पूर्ण रूप से मॉनसून पर निर्भर करती है। सिंचाई की सुविधा होने की स्थिति में थोड़ी बहुत सब्जी एवं गेहूं उपजा पाते हैं। इन फसलों का उपयोग खाने एवं बिक्री दोनो रूपों मे होता है।

पशुपालनः– चेरो जनजाति में पशुपालन जीविकोपार्जन के प्रमुख साधनों में से एक रहा है। राजा मेदनीराय के काल से संबंधित एक लोकगीत इसे प्रमाणित भी करता है "धनि धनि राजा मेंदनिया, घर घर वाजे मनहनिया" अर्थात सभी परिवारों में पशुपालन किया जाता था। आज भी चेरो जनजाति के लोगो द्वारा पालतु पशुओं के रूप में गाय, बैल, बकरी का पालन किया जाता है। गाय का दुध पीने के साथ बेचने का भी काम करते है, तो बैल की सहायता से खेती करते हैं एवं बकरी बेचकर भी अन्य आवश्यक्ताओं की पूर्ति करते है। खस्सी (बकरी के बच्चो) को खाने के रूप में भी प्रयोग करते हैं।

वनोत्पादः–वन से इन्हें कन्द मूल, केन्द, पियार, दातुन, पत्तल, दोना के लिए पत्ता एवं जलावन के लिए लकड़ी प्राप्त होती है। इनके धार्मिक अवसर करमा के लिए करम की डाली भी इन्हें वनो से ही प्राप्त होता है। अधिकांश चेरो जनजाति के लोग आज भी कच्चे एवं अर्ध पक्के मकानो में रहतें हैं फलतः इनके भवन निर्माण के लिए लकड़ियाँ बांस आदि वनों से हीं प्राप्त होते हैं। अपने निवास स्थान के पास की भूमिं पर लगे फसलों को जानवरों से बचाने के लिए घेराबंदी के लिए कांटे एवं झाडियॉ इन्हें वनों से हीं प्राप्त होता है।

मजदुरीः– वर्तमान समय में मजदुरी, चेरो अनुसूचित जनजाति के आय के मुख्य स्रोतों में से एक है। इनके द्वारा की जाने वाली मजदुरी के कार्यो को मुख्य रूप से तीन भागो में विभक्त किया जा सकता है– स्थानीय स्तर पर मजदुरी, पास के शहर में मजदुरी तथा मजदुरी के लिए अन्य राज्यो में पलायन। स्थानीय स्तर पर मजदुरी करने से इन्हें पैसों के अतिरिक्त दोपहर का भोजन भी प्राप्त होता है, पर इनकी मजदुरी दर कम होती है। कभी–कभी ये लोग सहयोग स्वरूप भी पड़ोसियो का काम सिर्फ भोजन पर कर देते हैं। सरकार द्वारा संचालित विकास के कार्यो में काम करने पर हीं इन्हें उचित मजदुरी मिल पाती है, जो महिला एवं पुरूष दोनो को एक समान मिलता है। स्थानीय नगरों में मजदुरी के लिए ये मुख्य तौर पर मेदनीनगर शहर जाते है। मेदनीनगर के लोगों का मानना है कि चेरो यदि इस शहर में मजदुरी ना करे तो शहर में श्रम समस्या का संकट उत्पन्न हो जायेगा। इनका पलायन मजदुरी के लिए अन्य राज्यों में भी होता है जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात इत्यादि। इनका पलायन भी मौसमी एवं दीर्घकालिक होता है। पलायीत मजदुर के रूप में ये ईंट भट्ठों, कारखानों एवं खेतों में काम करते हैं। इन्हें दूसरों के लिए काम करना पसंद नहीं, परंतु मजबुरी में ये मजदूरी के लिए वाध्य है।

नौकरीः– चेरो महतो जनजाति के लोगों में नौकरी भी आय का एक मुख्य स्रोत है। इस जनजाति के बहुत कम लोग सरकारी सेवा में कार्यरत हैं। पर अधिकांश चेरो जनजाति के लोग सरकारी नौकरी की इच्छा रखते हैं।

निष्कर्षः–

झारखण्ड प्राचीन काल से जनजातियों की एक प्रमुख केन्द्र एवं शरणस्थली रही है। आज भी इस क्षेत्र की विशिष्टता जनजातीय समुदाय से ही रेखांकित होती है। इनमें से चेरो भी एक है। वर्तमान समय में चेरो जनजाति के लोग अपने अस्तित्व के लिये कड़ा संघर्ष कर रहे हैं, ये कच्चे, आधे पक्के एवं पक्के मकानों में रहते हैं, आज भी अधिकांश जनसंख्या कच्चे मकानों में रहती हैं। चेरो में संयुक्त एवं एकांकी परिवार दोनों देखने को मिलते हैं, पर एकांकी परिवार की संख्या ज्यादा होने का मुख्य कारण विवाह के बाद पुत्र को परिवार से अलग कर देना है। कीर्तन इनके मनोरंजन के साधनों में से प्रमुख था। अब धीरे–धीरे इसका लोप होता जा रहा है। चेरो जनजाति में महिलायें आज भी दोयन दर्जे पर खड़ी है। वह परिवार में सामाजिक, धार्मिक, तथा आर्थिक सभी कार्यों में सहयोग करती है, पर निर्णयकर्त्ता के रूप में नहीं हैं। चेरो में पुनर्विवाह का प्रचलन देवर–भाभी, जीजा–साली के रूप में भी है। इन रिश्तों के अतिरिक्त भी पुनर्विवाह की मान्यता है। इनमें अंधविश्वास के तौर पर सफेद एवं काला जादू की मान्यता है। समयानुसार चेरो में साक्षरता दर विकसित हुआ है, पर शिक्षितों की संख्या कम है। ये महिला शिक्षा के प्रति उदासीन हैं, लड़कियों को आज पढ़ने लिखने भर शिक्षित करने की सोच रखते हैं। कृषि इनकी जीविका का मुख्य आधार है। ये खेती साझा में लेते और देते हैं। खेतों से सही रूप से जीवन यापन न होने तथा पशुपालन जो इनकी जीविका के मुख्य साधनों में से एक था, वह भी अब न के बराबर रह गया है, इसके कारण ये मजदूरी एवं पलायन के लिये बाध्य हो गये हैं। इसके फलस्वरूप

इनमें श्रम विभाजन की स्थिति देखने को मिलती है, जैसे राजमिस्त्री, बढ़ईगिरी आदि। इन स्थितियों के लिये इनमें धन संचय की प्रवृत्ति का अभाव भी है।

चेरो जनजाति के लोगों में यह भावना आज भी है कि इनके पूर्वज राजा थे, अतः ये किसी अन्य की भूमि पर काम करना या किसी की अधीनता नहीं स्वीकारना चाहते हैं। इनकी ऐसी मानसिकता भी इनकी गरीबी का कारण है, पर समय के साथ स्वतः इसमें परिवर्तन भी आने लगा है। चेरो जनजाति के लोगों में आज भी शिक्षा के प्रति विशेष झुकाव नहीं हो पाया है इससे निकट भविष्य में इनके आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावनायें नजर नहीं आती है। अन्य जनजातियों की भांति इनमें शराब की लत विकशित हो चुकी है जो अभिभावकों से युवाओं एवं बच्चों में भी आने लगा है, इससे इनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति में गिरावट आ रही है। बच्चों को भगवान की देन मानने के कारण भूमि पर जनसंख्या का भार भी बढ़ा है। अन्य जातियों एवं दबंगों द्वारा इनके भूमि पर कब्जा से इनमें भूमिहीनता की भी स्थिति आयी है। पलामू की वंजर भूमि, पलामू का वृष्टि छाया क्षेत्र होने एवं कृषि के लिये वर्षा पर निर्भरता भी इनकी निम्न आर्थिक स्थिति के लिये जिम्मेवार है। अब इस जनजाति के लोगों में कम लोगों द्वारा ही पशुपालन का कार्य किया जाता है। इनके मनोरंजन के परंपरागत साधन का विलोप होने से गवैया का काम कर जीवन यापन करने वाले लोगों ने भी अब मजदूरी कर अपना जीवन यापन करना प्रारंभ कर दिया है।

सुझाव :

डार्विन के मतानुसार उसी व्यक्ति को जीवित रहने का अधिकार है जो बदली हुई परिस्थितियो से सामंजस्य स्थापित कर सके। वर्तमान में विकास की पहली प्राथमिकता शिक्षा है, इस पर विशेष रूप से बल देने की आवश्यकता है। वह भी लड़का एवं लड़कियों दोनों को। इससे वे अपना सर्वांगिन विकास कर सकते हैं। चेरों में शराब संस्कृति का अंश नहीं है। अतः अपने संस्कृति को ध्यान में रखते हुए इसके परित्याग का प्रयास करना ही बेहतर होगा। इससे ऋणग्रस्ता में कमी आने के साथ ही साथ सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में आयी गिरावट को कम करने में सहायता मिलेगी। कृषि जो इनकी आजीविका का मूल आधार है, कृषि के क्षेत्र में नयी तकनीक अपना कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकते हैं। पशुपालन को पुनः अभियान के तौर पर अपनाने से ये अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ होंगे। सरकारी योजनाओं एवं सुविधाओं का सजग होकर लाभ पाने का प्रयास करना होगा, ताकि ये अपना विकास कर सकें। राजतंत्र इनका इतिहास रहा है। वर्तमान में लोकतांत्रिक मानसिकता से ही सर्वांगिन विकास संभव है। सरकारी स्तर पर इस जनजाति के लोगों को मत्स्यपालन, पषुपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन एवं स्वरोगजार के लिये तकनिकी प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है, ताकि ये स्वावलम्बी बन सकें। ऐसा होने पर संभवतः यह जनजाति अन्य अनुसुचित जनजातियां के अपेक्षा तेजी से अपना विकास करने में सक्षम हो।

संदर्भ सूची :

1. जनगणना 2011, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. डाल्टन, ई0टी0, 1782, इथनोलॉजी ऑफ बंगाल, कलकत्ता,
3. तिवारी राम कुमार, 2004, झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन पब्लिकेशन्स, राँची
4. निर्देशक, 2016, रामदयाल मुण्डा, जनजातीय कल्याण एवं शोध संस्थान, जर्नल 44 संस्करण
5. मिश्र, शंभु नाथ, 2002चेरो जनजाति का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन (शोध प्रबंध), राँची विश्वविद्यालय, राँची
6. मोहन, हरि 1973, The Chero, Bihar Tribal Wealfare Research Institute, Ranchi
7. विरोत्तम, वी0, 2004, झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना,
8. वर्मा उमेश कुमार 2009, झारखण्ड का जनजातीय समाज, सुबोध ग्रंथमाला, राँची
9. शर्मा विमला चरण एवं विक्रम कीर्ति, 2006, झारखण्ड की जनजातियाँ, क्राऊन पब्लिकेशन्स, राँची
10. सिंह, सुनील कुमार, 2014, झारखण्ड परिदृश्य, तृतीय संस्करण, क्राउन पब्लिकेशन्स,